पूर्वजन्म अनुभूति शिविर सम्पन्न

लाडनूँ 5 अक्टूबर। प्रेक्षा फाउण्डेशन के द्वारा आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित पूर्वजन्म अनुभूति शिविर 1 से 5 अक्टूबर 2013 का समापन आचार्यश्री के सान्निध्य में हुआ। शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि यदि व्यक्ति प्रतिदिन आत्मावलोकन कर बिताये गये समय का आंकलन कर पूर्व में किये गये क्रोध, नकारात्मक विचार आदि को पुनः न दोहराने का संकल्प ग्रहण करे तो निश्चित ही सद्मार्ग एवं सद्गति की प्राप्ति होती है। उन्होंने प्रतिदिन आत्मावलोकन एवं प्रतिक्रमण करने की प्रेरणा दी। शिविरार्थियों ने अपने–अपने अनुभव सुनाए।

इससे पूर्व तुलसी अध्यात्म नीडम् में प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व है। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर इस युग के महान वैज्ञानिक थे, जिन्होंने चेतना पर प्रयोग कर घोषणा की –'आत्मा है, आत्मा थी और आत्मा रहेगी।' जैसे परमाणु नष्ट नहीं होता और न एक भी नया परमाणु पैदा होता है वैसे ही नई आत्मा पैदा नहीं होती और न ही नष्ट होती है। महावीर ने न केवल घोषणा की बल्कि यह बताया कि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का अस्तित्व है। अपने कृत कर्मों को भोगने के लिए पुनर्जन्म धारण करना ही होता है और साधना के द्वारा जब तक पूर्वकृत कर्मों का विलय नहीं होता, जन्म और मृत्यु का चक्र चलता रहता है।

शिविर प्रशिक्षण क्रम में मुनिश्री किशनलालजी ने पूर्वजन्म अनुभूति के संदर्भ में सैद्धान्तिक जानकारी के साथ प्रयोग करवाए। मुनिश्री हिमांशुकुमारजी ने अनुप्रेक्षा का प्रायोगिक अभ्यास तथा बजरंग जैन ने पुनर्जन्म, शरीर एवं स्वास्थ्य के संदर्भ में वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक जानकारी दी। इसी प्रकार जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने कायोत्सर्ग तथा प्रशिक्षक रामदेव ने आसन–प्राणायाम का प्रायोगिक अभ्यास करवाया। शिविर संचालन में साधक जीतमल गुलगुलिया सहित तुलसी अध्यात्म नीड़म के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों के कुछ अनुभव इस प्रकार है –

बीकानेर के इन्द्रचन्द सेठिया को शान्ति एवं प्रफुल्लता के साथ मछली एवं मंदिर दिखाई दिया। उन्होंने हल्के होकर रंगीन ब्रह्माण्ड में उड़ने का भी अनुभव किया। दिल्ली के विकास जैन को लम्बी सुरंग के साथ अनेक दृश्य दिखाई दिये लेकिन वे उन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाये। नोयडा के पुलकित जैन ने हाथों में ऊर्जा, चैतन्य केन्द्रों पर प्रकम्पन्न के साथ पांच संतों को देखा किन्तु वे उन्हें पहचान नहीं पाए। दर्पण के साथ ध्यान का प्रयोग करते समय अचानक डर के कारण उनके रोंगटे खड़े हो गये। नोयडा से ही समागत एक अन्य भाई ने शरीर में अभूतपूर्व ऊर्जा के साथ गर्मी का अनुभव किया। नागपुर महाराष्ट्र के आनन्द सेठिया ने ध्यान में अद्वितीय शान्ति के साथ स्वयं के मृत शरीर को देखा, उन्होंने बताया कि जैसे उनका शरीर जमीन में विलीन हो रहा था। गौहाटी के साधक सुराणा जी ने प्राचीन समय के वातावरण में छोटे बालक को माँ–बाप के साथ खेलते हुए देखा।

प्रेषक –
हनुमान मल शर्मा
सहायक निदेशक,
जीवन विज्ञान अकादमी,
जैन विश्व भारती, लाडनूँ (राजस्थान)